Vagisha International Multidisciplinary Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal)
Volume-01, Issue-02, April-2026| ISSN: 3139-2776 (online)
Available online at:https://vimrj.com/

अनामिका की कविता में स्त्री विमर्श के विविध आयाम

शिवानी यादव
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय
Email ID : shivaniy9540@gmail.com

Received: 27 March 2026 **| Accepted:** 05 April 2026 **| Published:** 25 April 2026

सारांश

अनामिका की कविताओं में स्त्री विमर्श के विविध आयाम के संदर्भ में देखा जा सकता है जिसमें स्त्री विमर्श के आधारभूत कारणों के रूप में अनामिका का स्त्री विमर्श की अवधारणा, स्वरूप और स्त्री विमर्श, परिभाषा एवं चेतना के संदर्भ को गहरे भाव बोध के साथ दर्शाया गया है। जिसमें बदलते परिवेश, टूटते मूल्य और विखंडित होते संयुक्त परिवार, अकेलेपन का संत्रास, स्त्री पुरुष के संबंधों में आई ठंडक अनामिका की कविताओं की विशेषता है। यूं देखा जाए तो हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श को एक व्यापक फलक पर देखा जा सकता है। साहित्य आंदोलन में स्त्री अस्मिता को केंद्र में रख कर संगठित रूप से रचा गया साहित्य स्त्री विमर्श है। स्त्री विमर्श सत्ता के समीकरण और संतुलन के लिए संघर्षरत साहित्य है जो अपने अधिकार एवं सम्मान की लड़ाई लड़ रहा है स इस विमर्श में पितृसत्तात्मक विचारधारा का विरोध ही नहीं बल्कि स्त्रियों के सामाजिक, मानसिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्तर पर समानाधिकार की मांग करता है।

मुख्य शब्द : अनामिका, स्त्री विमर्श, नारी चेतना, स्त्री अस्मिता, स्त्री स्वातंत्र्य, स्त्री अधिकार

स्त्री विमर्श के अंतर्गत स्त्रीवादी आंदोलन आदि पर विचार विमर्श किया जाए तो इसके मूल में स्त्री के अस्तित्व मौलिक अधिकार और उसके मुक्ति के प्रश्न हैंस विमर्श शब्द अत्यंत व्यापक है अतः विमर्श शब्द व्यक्तिपरक न होकर अर्थ विस्तार से जुड़ा हुआ है। स्त्री विमर्श के संदर्भ में प्रभा खेतान ने लिखा है– "नारीवाद न मार्क्सवाद है और न पूंजीवादस स्त्री हर जगह है। हर वाद में है, फैलाव में है, मगर संस्कृति के विस्तृत फलक पर आज भी वह वस्तुकरण की इस पारंपरिक प्रक्रिया को पुरुष

दृष्टि से नहीं बल्कि स्त्री दृष्टि से देखने और समझने की जरूरत है।"[1]

स्त्री मुक्ति आंदोलन का आरंभ पश्चिम के देशों से माना जाता है। यह आंदोलन किसी एक दिन की प्रतिक्रिया का परिणाम नहीं है बल्कि अनवरत काल से चली आ रही महिलाओं के साथ भेदभाव का परिणति है। सभी देशों में स्त्रियों का शोषण होता रहा है। इस शोषण के विरुद्ध दुनिया के लगभग सभी देशों में अलग–अलग आंदोलन हुए और समय–समय पर होते चले आ रहे हैं जिसका प्रभाव भारत में भी दिखाई दियास स्त्रीयों, साहित्यकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इस मुद्दों को गंभीरता से उठाया है।

कात्यायनी के अनुसार– "स्त्री विमर्श अथवा स्त्रीवाद पुरुष और स्त्री के बीच नकारात्मक भेदभाव की जगह स्त्री के प्रति सकारात्मक पक्षपात की बात करता है। वस्तुतः इस रूप में देखा जाए तो स्त्री विमर्श अपने समय और समाज के जीवन की वास्तविकताओं तथा संभावनाओं को तलाश करने वाली दृष्टि है।"[2] अतः स्पष्ट है कि स्त्री विमर्श साहित्य में चलने वाला एक ऐसा विमर्श है जिसमें स्त्रियों के शोषण एवं उत्पीड़न का दस्तावेज हैस वर्तमान समय में स्त्रियाँ एक ओर तीव्र गति से प्रगति तो कर रही हूँ वहीं दूसरी ओर अपने अधिकार एवं सम्मान के लिए संघर्ष भी कर रही है।

भारतीय संदर्भ में देखा जाए तो स्वतंत्रता पूर्व रमाबाई, ताराबाई शिंदे और सावित्रीबाई फुले आदि स्त्रियों ने अधिकार सम्मान एवं शिक्षा के लिए आवाज बुलंद की समकालीन स्त्री विमर्शकारों में कात्यायनी, अनामिका,उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, महादेवी वर्मा, नासिर शर्मा, मनीषा कुलश्रेष्ठ आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका रही है। समकालीन हिंदी कवयित्रियों में अनामिका के काव्य में स्त्री विमर्श का प्रमुख स्थान है। अनामिका का काव्य स्त्री विमर्श और बहस का मुद्दा न होकर चेतना का विषय हैस इनके साहित्य के संदर्भ में मदन कश्यप का कहना है– "कि अनामिका हिंदी की पहली ऐसी स्त्री कवयित्री हैं जिन्होंने अन्तर्वस्तु से आगे बढ़कर भाषा, शिल्प, सौंदर्य और आस्वाद के स्तर पर कविता को एक नया धरातल दिया हैस स्त्री का अपना धरातल है इसके लिए और इसके लिए लंबा संघर्ष करना पड़ास क्योंकि अंतर्वस्त्र में बदलाव तो आसान होता है मगर सौंदर्यबोध और आस्वाद को बदलना बहुत कठिन और इसे स्वीकृति दिलाना भी बहुत कठिन है।"

अनामिका की कविताओं में स्त्रीवादी विमर्श व्यापक स्तर पर देखा जाता है इनकी कविताओं में भाई–बहन के बीच असमान व्यवहार, ससुराल में सभ्य पतिव्रता स्त्री विविध रिश्तों में शोषण की शिकार

होती हुई स्त्री दयनीय स्त्री आदि दशाओं को उजागर करते हुए अनामिका का काव्य स्त्री विमर्श की अवधारणा को प्रस्तुत करता है। जैसे–

राम पाठशाला जा!
राधा खाना पका!
राम आ बताशा खा!
राधा झाड़ू लगा!
भईया अब सोएगा!
जाकर बिस्तर बिछा! [3]

पितृसत्ता की इस विषैली व्यवस्था के बीच घुटन महसूस करती, शोषित प्रताड़ित होने के बावजूद भारतीय परिवार की इस व्यवस्था का प्रतिकार नहीं कर पातीस अनामिका का स्त्री विमर्श का दृष्टिकोण अन्य लेखिकाओं से भिन्न है अनामिका की कविताओं में स्त्री समानता की बात देखने को मिलती है। अनामिका का मानना है कि पुरुष अतिवादी पुरुष न हो और स्त्रियां अतिवादी स्त्री न होस अनामिका अतिवादी सरहदों पर जीने में विश्वास नहीं रखती है। वे पुल बनना चाहती है जिससे दुनिया को जोड़ा जा सके। जिससे सबके बीच गपशप, अंतरंग गपशप वाला रिश्ता बन सकेस जिससे गाठों को सुलझा सके।

अनामिका की कविताओं में नारीवाद घर–आंगन, चूल्हे–चौके, दरवाजों एवं दीवारों के बीच से निकल कर अपने अस्तित्व का एहसास कराती हुई स्त्री है। जैसे–

मैं समेट रही हूँ खुद को
अपने झोले में ही
अब निकलूंगी मैं भी
अपने संधान में अकेली [4]

स्त्रीवादी समीक्षा पर टिप्पणी करते हुए अनामिका लिखती है– "स्त्रीवादी समीक्षा एक बड़ा अवदान यह है की वैयक्तिक अनुभूतियों का सामाजिक संदर्भ में इसने संभव बनाया और बताया है कि जिसे स्त्रियाँ वैयक्तिक विफलता मानकर घुटती रहती थी, उस असमंजन और असमंजस का मूल पूर्व ग्रस्त

पितृसत्तात्मक समाज में है, जिसके शिकार पुरुष भी है, क्योंकि दरअसल यह स्त्री और पुरुष दोनों का सम्यक विकास अवरुद्ध करता है। दोनों का जीवन भी विषाक्त करता हैस एक को भेड़ तो दूसरे को भेड़िया बना डालता है तो दोनों ही मानवीय गरिमा से नीचे गिरते हैं।"[5]

अनामिका की कविताओं में गहरी सदिच्छा है जो विश्वास करती है कि स्त्री करुणा और सहानुभूति से इस संसार को बदल को बदला जा सकता है। सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से अनामिका को आने वाले समय स्त्री कविता से बहुत उम्मीद हैस भारतीय समाज में पतिव्रता स्त्री आदर्शवादी मानी जाती है। अपने पति की जी हुजूरी में इनका जीवन समर्पित हो जाता है। इन सबके बावजूद ब्रिटिश सरकार के आतंक से नहीं बच पाती है। अनामिका ने पतिव्रता कविता का आरंभ ब्रिटिश शासन में न डूबने वाले सूरज से किया है, जिसमें स्त्रियों के लिए पति के आतंक का साया कभी खत्म नहीं होता–

स्वामी जहाँ नहीं भी होते थे
होते थे उनके वहाँ पंजे,
मुहर, तौलिये, डंडे,
स्टैम्प–पेपर, चप्पल–जूते,
हिचकियाँ–डकारें–खर्राटे
और त्यौरियां–धमकियाँ–गालियां खचाखच [6]

अनामिका के सभी काव्य संकलनों में स्त्री संबंधी कविताएं बड़े बड़े काव्य फलक पर फैली है जिनमें बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक स्त्री जीवन के छोटे–बड़े अंतर्विरोध दिखाई पड़ते हैं। स्त्री संबंधों के घुटन, पारिवारिक हिंसा व अपमान के असंख्य प्रकरण द्वारा रची जाती हैस अनामिका के यहाँ ऐसी स्थितियों में अनेकानेक उदाहरण देखने को मिलते हैं–

पीठ नीली,
चेहरा पीला,
लाल आंखें और
जख्म हरे
कुदरत के सब रंगों की बोतल
उलट–पलट जाती है मुझ पर

उनके आते ही [7]

भारतीय परिवेश में संबंधों के ढांचे को सदियों से नतमस्तक होकर स्वीकार किया जाता रहास परिवार की इज्जत स्त्री अपमान और बलिदान पर टिका हुआ है। भारतीय पितृसत्तात्मक व्यवस्था के ढांचे में स्त्री शोषण की आधारभूम सृजित होती हैस घर में वृद्धाएं कैसे रहती हैं उसका भी दारू चित्र का वितरण प्रस्तुत किया है–

रहती है वृद्धाएं घर में रहती है
लेकिन ऐसे जैसे अपने होने के खातिर हो क्षमा प्रार्थी
लोगों के आते ही बैठक से उठ जाती
छुप छुपकर रहती है साया–सी माया–सी![8]

यानी देखा जाए तो जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत परिवार के भीतर स्त्री नियति बदलती नहीं है अनामिका की स्त्री संबंधी सभी कविताएं अलग न होकर बल्कि स्त्री जीवन के वैविध्य पक्षों पर प्रकाश डालती कविता है। अनामिका का मानना है कि स्त्री अपनी पीड़ा को सुई बनाकर समाज गूँथने का कार्य करती हैस उनके यहाँ स्त्री एक बड़े सामाजिक वर्ग के रूप में मौजूद हैं जिसमें मौसियाँ, वृद्धाएं, सहेलियां सबके अनुभव एक दूसरे से कड़ियों की भांति जुड़े हैं और पीड़ा का अंतःसूत्र लगभग सभी में व्याप्त हैस ये स्त्रियाँ एक दूसरे के साथ सुख दुख में नजर आती है–

उनकी भी होती है कमरधनियां
चाहे गिल्लत की होती लेकिन होती
झनझन–झन बजती वे
मिलजुल कर मूसल चलाते हुए [9]

वर्तमान समय में दुनिया 'बाई वन गेट वन फ्री' की ही चल रही है। इसी जुमले को अनामिका जी ने स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में परिवार में स्त्रियों की स्थिति को जोड़कर कुछ इस प्रकार देखती है–

खाये ही जाती हैं
शाम से सुबह तक
खूब मिर्चीदार गालियां

ऊपर से थप्पड़, घूंसे, डांट,
ताने, बोनस में
बाईबन गेट वन फ्री
और ज्यादातर तो सैंपल में मुफ्त बरी [10]

परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए स्त्रियों को उनके बदले पुरस्कार स्वरूप गालियां मारपीट मिलना ही भारतीय स्त्री का दुर्भाग्य रहास कोई यह नहीं सोचता है कि पुरुष की सफलताओं के नीचे स्त्री दबती चली गई स दोयम दर्जे में रह जाने की पीड़ा तथा समाज का स्त्री के प्रति उपेक्षित व्यवहार स्त्री मन को व्यथित करता है वह अपनी स्थिति से अनभिज्ञ नहीं है और इसकी अभिव्यक्ति अनामिका की कविता में स्पष्ट नजर आती है–

पढ़ा गया हमको
जैसे पढ़ा जाता है कागज
बच्चों की फटी कॉपियों का
चनाजोर गरम के लिफाफे बनाने के पहले
देखा गया हमको
जैसे कुफ्त हो उनींदे
देखी जाती है कलाई घड़ी
अलसुबह अलार्म बजने के बादस[11]

असमानता, यातना और संघर्ष के असंख्य बिंब अनामिका की कविताओं में देखने को मिलते हैं तो उससे मुक्ति का गहरा अंतर्संबंध भी है, अनामिका लिखती है–

मैं एक दरवाजा थी
मुझे जितना पीटा गया
उतना खुलती गईस [12]

अनामिका की कविता का एक पक्ष स्त्री पीड़ा को दर्शाता है तो दूसरा पक्ष है मुक्ति की खोज मेंस लगातार प्रताड़ित होने के बावजूद स्त्री का एक कोना ऐसा है जो हार नहीं मानता जो दिन प्रतिदिन ऊर्जावान होता जा रहा है।

निष्कर्ष– अनामिका की कविताएँ गोलार्द्ध की भांति व वैश्वीकरण के साथ निजता का समन्वय स्थापित करती है। नव सामाजिक विमर्शों में अनामिका की कविताएं अपने विमर्श का सोपान स्वयं निर्धारित करती हैं। वे अतिवादी न होकर सहजता के माध्यम से सबको साथ लेकर चलने की भावना रखती है इनकी कविताओं के कैनवास में स्त्रियों के विविध रूप देखने को मिलते हैं। इनमें महानगर, गांव, बुद्धजीवी, श्रमजीवी बालक और वृद्ध परिवार समाज की चेतना का विस्तार हैस इनकी कविताएं समाज में स्त्रियों की दयनीय दशा से अवगत कराती हुई उनकी मुक्ति के नए मार्ग को प्रशस्त करती है।

संदर्भ सूची

1. हंस, अक्टूबर 1996, पृष्ठ 76.
2. हंस, मार्च 2000, पृष्ठ 95.
3. 75 कविताएँ, रेखा सेठी, पृष्ठ 34.
4. अनामिका, तुलसी का झोला, दूब धान, पृष्ट 21.
5. कविता में औरत, अनामिका, पृष्ठ 11.
6. अनामिका, पतिव्रता, खुरदरी हथेलियां, पृष्ठ 27.
7. अनामिका, टूटी बिखरी और पीटी हुई, खुर्दरी हथेलियां, पृष्ठ 49.
8. अनामिका, वृद्धाएं धरती का नमक है, खुरदरी हथेलियां, पृष्ठ 49.
9. रेखा सेठी, कमरधनियां, 75 कविताएं, पृष्ठ 84.
10. अनामिका, पतिव्रता, पचास कविताएं
11. रेखा सेठी, स्त्रियाँ, 75 कविताएं, पृष्ठ 29.
12. अनामिका, दरवाजा, धूप धान, पृष्ठ 24.